UGC FUNDED MINOR RESEARCH PROJECT

FINAL REPORT OF THE WORK DONE ON THE MINOR RESEARCH PROJECT

सुमित्रानंदन पंत के काव्य में गांधीवादी चेतना

EXECUTIVE SUMMARY

डॉ.सरोज पाटील

असिस्टंट प्रोफेसर

श्री.शहाजी छ. महाविद्यालय, कोल्हापुर

मो.9922770661

Email-saroj120575@gmail.com

Address : 1808 'A' Brahmeshwar Bag,

Shivaji Peth, Kolhapur (Maharashtra) 416012

लक्ष्य – (OBJECTIVES OF THE PROJECT)

1) सुमित्रानंदन पंत की काव्ययात्रा के महत्वपूर्ण पडाव कौन से है ?
2) मूलतः छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत गांधीवाद के प्रति आकर्षित कैसे हुए ?
3) पंत की कौन–कौन सी कृतियां गांधीवाद से प्रभावित हैं ?
4) छायावाद, गांधीवाद, मार्क्सवाद, अरविंदवाद एवं नवमानवतावाद आदि से प्रभावित पंत साहित्य का गांधीवादी पडाव किस रुप में उल्लेखनिय रहा है ?
5) पंत गांधीवाद के स्वीकार से मानवजीवन के सर्वांगीण विकास की संभावना किस रुप में देखते हैं ?

उपलब्धियां – (ACHIEVEMENTS FROM THE PROJECT)

पंत तत्कालिन समय में परिवेशगत विषम स्थितियों को महसूस कर रहे थे वहीं दूसरी ओर उनमें सकारात्मक परिवर्तन ले आने के लिए आवश्यक बातों को निर्धारित भी कर रहे थे। ऐसे में गांधीवाद के मौलिक तत्वों पर चिंतन कर रहे कवि की ऐसी आस्था बनी कि वे धरती पर जिस मानव जीवन की अपेक्षा रखते हैं वह गांधीवादी जीवनमूल्यों के जरिए ही निर्माण हो सकती हैं। जिससे पंत गांधीवाद के प्रति आकर्षित हुए।

पंत मूलतः छायावादी रहे पर बाद में वे गांधीवाद, मार्क्सवाद, अरविंदवाद, नवमानवतावाद से जुडे रहे।

युगांत, युगवाणी, युगांतर, ग्राम्या, लोकायतन, मुक्तियज्ञ आदि कृतियों में पंत का गांधीवादी चिंतन स्पष्ट रुप में उजागर हुआ है।

महामानव गांधी ने सत्य, अहिंसा और मानवतावाद के एकत्रित समन्वय में भारतीय मूल्यों को नए सीरे से स्थापित करना चाहा। भारत की सांस्कृतिक चेतना को गतिशील बनाना चाहा। पंत को गांधी के व्यक्तित्व और विचार में संपूर्ण मानवजाति की उन्नति दिखाई दे रही थी।

पंत लिखित युगांत, युगवाणी, ग्राम्या, लोकायतन, मुक्तियज्ञ आदि कृतियां पूरी तरह गांधीवाद से प्रभावित हैं। इन कृतियों में पंत ने परंपरावादी विचारों, धारणाओं का त्याग, कल्पना एवं भावुकता का त्याग कर उपयुक्त जीवनमूल्यों की खोज करने का प्रयास किया है। जो गांधीवाद से प्रभावित हैं। इन कृतियों में कवि की चिंतनप्रधानता एवं दार्शनिकता उजागर हुई है। पंत ने गांधी को नवसंस्कृति के दूत इस रुप में संबोंधित करते हुए सत्य एवं अहिंसा इन गांधीवादी मूल्यों की अनिवार्यता पाठकों के सामने रखी है।

पंत की मान्यता है कि मार्क्सवाद ने सामूहिक जनतंत्र का सिध्दांत स्पष्ट करते हुए संपूर्ण विश्व को भौतिक दर्शन कराया परंतु आत्मा को उन्नत बनाने का मार्ग गांधीवाद ने जनमानस के सामने रखा । अतः गांधीवाद को अपनाने की आवश्यकता पर पंत ने बल दिया है। इस रुप में पंत साहित्य का गांधीवादी पडाव विशेष उल्लेखनिय है।

सारांश – (SUMMARY OF THE FINDINGS)

सुमित्रानंदन पंत हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ छायावादी कवि इस रुप में चर्चित रहे हैं। यह सर्वमान्य है कि प्रत्येक सहृदय कलाकार अपनी समकालीन स्थितियों से प्रभावित रहता है। स्वाभाविकतः कवि सुमित्रानंदन पंत भी अपनी समकालीन स्थितियों से प्रभावित रहे हैं। भले ही पंत की मनोवस्था समकालीन विविध वादों, प्रवादों, मतों से प्रभावित रही हो, जिसमें छायावाद, गांधीवाद, मार्क्सवाद, अरविंदवाद तथा नवमानवतावाद आदि उल्लेखनिय प्रवाह रहे हैं फिर भी कवि की काव्ययात्रा का गांधीवादी पडाव विशेष उल्लेखनिय रहा है। यहाँ पर कवि प्रौढ़ और चिंतनशील रूप में पाठकों के सम्मुख आए हैं।

कवि की प्रदीर्घ काव्ययात्रा प्रकृति, मानवतावाद और दर्शन इन तीन पडावों में विभाजित की जा सकती है। सन् 1932–42 तक के अपने द्वितीय पड़ाव में पंत मानव जीवन की विषमताओं, समस्याओं पर भाष्य करते दिखाई देते हैं। पंत लिखित युगांत, युगवाणी, युगान्तर, ग्राम्या, लोकायतन, मुक्तियज्ञ आदि कृतियाँ इस भाष्य की प्रस्तोता बनी हैं। इन कृतियों में पंत का गांधीवादी चिंतन स्पष्ट रूप से उजागर हुआ है।

महात्मा गांधी के जीवनमूल्यों से प्रभावित पंत गांधीवाद के स्वीकार से ही मानवजीवन के सर्वांगीण विकास की संभावना पर विश्वास रखते हैं। तत्कालीन समय में एक

ओर कवि का अतिसंवेदनशील कवि मन परिवेश गत विषम स्थितियों को महसूस कर रहा था वहीं दूसरी ओर उनमें परिवर्तन ले आने के लिए आवश्यक बातों को मन ही मन निर्धारित भी कर रहा था। इस मनोवस्था में उनके साथ था गांधीवाद क्योंकि गांधीवाद के मौलिक तत्वों पर चिंतन कर रहे कवी कि ऐसी आस्था बनी हुई थी कि वे धरती पर जिस मानव जीवन की अपेक्षा रखते हैं वह गांधीवादी जीवन मूल्यों के जरिए ही निर्माण हो सकता है।

महामानव गांधी ने सत्य, अहिंसा और मानवता के एकत्रित समन्वय में भारतीय मूल्यों को नए सीरे से स्थापित करना चाहा। भारत की सांस्कृतिक चेतना को गतिशील बनाना चाहा। पंत को गांधी के व्यक्तित्व और विचार में संपूर्ण मानवजाति की उन्नति दिखाई दे रही थी। 'युगांत' में गांधीवाद से प्रभावित पंत के दर्शन हो जाते हैं। सन् 1934–36 इस रचनाकाल की कृ ति 'युगांत' में पंत परंपरावादी विचारों, धारणाओं को किनारे लगाते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। 'युगांत' से पूर्व प्रकृति के प्रति अत्याधिक मात्रा में आकर्षित पंत ने 'युगांत' में प्रकृति के बजाय मानव को केंद्र में रखा है। यहाँ पर वे कल्पना, भावुकता को छोडकर मानव के लिए उपयुक्त जीवनमूल्यों की खोज में लगे दिखाई देते हैं। उनमें आया यह परिवर्तन निश्चित ही गांधीवाद से प्रभावित हैं। 'युगांत' की अंतिम कविता 'बापू के प्रति' इस दृष्टि से विशेष कविता है। युगांत की कविताएं चिंतनप्रधान एवं कवि की दार्शनिकता को स्पष्ट करनेवाली है। पहली बार प्रकृति से हटकर मानवीय समस्याओं से जुडे पंत इन कविताओं में मानवीय पूर्णता की राह खोजते दिखाई देते हैं।

युगांत के पश्चात प्रकाशित कृति 'युगवाणी' की शुरुवात 'बापू' इस कविता से हुई है। इस कविता में कवि पंत ने गांधी को नवसंस्कृति के दूत संबोधित करते हुए सत्य और अहिंसा इन गांधीवादी मूल्यों की अनिवार्यता पाठकों के सामने रखी है। इस संग्रह की कविता 'समाजवाद गांधीवाद' द्वारा कवि ने गांधीवाद और मार्क्सवाद इन दोनों के भेद को स्पष्ट करते हुए गांधीवाद की आवश्यकता विषद की है। कवि की मान्यता है कि मार्क्सवाद ने सामूहिक जनतंत्र का सिद्धांत स्पष्ट करते हुए संपूर्ण विश्व को भौतिक दर्शन कराया परंतु आत्मा को उन्नत बनाने का मार्ग गांधीवाद ने जनमानस के सामने रखा। गांधी मानते थे कि आत्मिक दृष्टि से उन्नत बना मानव ही देश को विकास की राह पर ले जा सकता है। अतः पंत ने गांधीवाद को अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया है।

गांधीवाद से प्रभावित पंत पुनः पुनः अपनी कृतियों द्वारा गांधी दर्शन की महत्ता विषद करते दिखाई देते हैं। उपर उलेखित दो कृतियों के साथ ही 'युगांतर' नामक कृति का यहाँ पर उलेख अनिवार्य है क्योंकि इस कृति में गांधी के देहांत पर लिखि लगभग दो दर्जन कविताएं गांधी दर्शन को उजागर करती है। जिसमें गांधी का उदात्त व्यक्तित्व चित्रित हुआ

है। ये कविताएं पंत की वैयक्तिकता के बजाय गांधी दर्शन की प्रस्रोता बनी हैं। 'गांधीयुग' इस शीर्षक से बनी कविता में पंत ने केवल गांधी ही नहीं बल्कि संपूर्ण गांधीवाद की प्रशस्ति की है।

इसके पश्चात प्रकाशित कृति 'ग्राम्या' के केंद्र में ग्रामीण संस्कृति है। इसमें पंत की दृष्टि में आया परिवर्तन देखा जा सकता है। उन्हें महसूस होने लगा कि मनुष्य जीवन का लक्ष्य केवल अपनी प्राथमिक जरूरते पूर्ण करना नहीं होना चाहिए। नए सीरे से मनुष्य का मानसिक गठन करने के लिए सांस्कृतिक आंदोलन की भी आवश्यकता है। यहां पर वे गांधीवाद के साथ मार्क्सवाद को अपनाते दिखाई देते हैं। वे दोनों के समन्वय में विकास का सपना देखने लगे। अर्थात 'युगांत' में वे पुरानी परंपराओं को तोडते दिखाई देते हैं। 'युगवाणी' में युगीन शक्तियों की पुकार है तो 'ग्राम्या' में ग्रामसंस्कृति रेखांकित है। तत्पश्चात् रजतशिखर, वाणी, कला और बूढ़ाचाँद तथा अन्य रचनाओं में कवि की अपनी मानवतावादी दृष्टि स्पष्ट होती है। यह कृतियां बडी मोहक बनी हैं। स्वर्ण किरण, स्वर्णधूलि तथा 'उत्तरा' में कवि की उदात्त दार्शनिक वृति के दर्शन हो जाते हैं। गांधी के संपूर्ण व्यक्तित्व पर आधारित 'लोकायतन' नामक काव्यकृति में पंत ने गांधी के सत्य, अहिंसा, विश्वबंधूत्व, देशप्रेम, देशसेवा, विकास, मानवतावाद आदि मूल्यों के साथ अरविंद दर्शन को रेखांकित किया है।

इस द्विखंडिय काव्य के प्रथम खंड में कवि ने बाह्य परिवेश का वर्णन किया है तथा दूसरे खंड में उन्होंने अंतःश्चेतना पर प्रकाश डाला है। कवि की दृष्टि में मनुष्य के व्यक्तित्व विकास के लिए भौतिकता एवं अध्यात्मिकता दोनों की जरूरत होती है। इसी के आधार पर कवि ने मानव विकास की कथा रची है। गांधीवादी मूल्य इसका आधार बने हैं। इन मूल्यों को साथ लिए व्यापक स्तर पर मानवतावाद को स्थापित करना कवि का लक्ष्य है। मानवतावादी स्वर पंत के काव्य की पहचान है जो आदि से अंत तक उनके साथ जुडा रहा है। 'मुक्तियज्ञ' में पंत ने गांधी की दांडी यात्रा से लेकर स्वतंत्रता संग्राम की घटनाओं के साथ साथ स्वराज्यप्राप्ति तक का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण किया है। स्वतंत्रतासंग्राम की घटनाओं में अंग्रेजों की कूटनीति, पशूता, बटवारें की पीड़ा आदि के चित्रण से पंत ने तत्कालीन भारत की दग्ध स्थितियों का चित्रण कर शांति की कामना की है। मानवतावाद को केंद्र में रखकर अपने रचनाकर्म में रत पंत ने मनोवैज्ञानिक आध्यात्म पर चिंतन शुरू किया तब नवचेतनावादी रचनाओं की निर्मिती हुई। यही रचनाएं कवि पंत को अपेक्षित नवमानवतावाद कहलायी। कवि वैश्विक स्तर पर नवमानवतावाद को स्थापित देखना चाहते हैं।

निष्कर्ष रूप पंत की प्रदीर्घ काव्ययात्रा पचास वर्षों से अधिक रही। यह लंबी काव्ययात्रा प्रकृतिवाद, सौंदर्यवाद, गांधीवाद, मार्क्सवाद, मानवतावाद, अरविंददर्शन,

नवमानवतावाद को प्रस्तुति देती रही। उनकी आरंभिक रचनाएं प्रकृति पर आधारित रही पर उसके बाद उनकी रचनाओं पर दर्शन हावी हो गया। अपनी काव्य यात्रा में वे विविध वादों से तब तक ही जुडे रहे जब तक वह जीवन की व्याख्या करने में सहायक प्रतीत होता हो। गांधीवाद से प्रभावित पंत की कृतियां जीवनमूल्यों से परिपूर्ण, मार्गदर्शक एवं मांगलिक हैं। देशप्रेम एवं विश्वबंधूत्व की भावना से ओतप्रोत इन कृतियों में पाठकों को कृतिशील एवं चिंतनमग्न बनाने की अपूर्व क्षमता है। ये कृतियां मानवजाति की आत्मिक उन्नती के लिए प्रेरक हैं। गांधी के प्रति अपार श्रद्धा और निष्ठा रखकर अंकित की गयी इन कृतियों में कवि ने सत्य, अहिंसा, परोपकार, दया, धर्म एवं करूणा के महत्व को स्वीकार कर उनका प्रतिपादन गांधीवाद के परिप्रेक्ष्य में किया है।

अंततः पंत की प्रदीर्घ, गतिशील और विकसनशील काव्ययात्रा भले ही विविध वादों, मतप्रवाहों से संपन्न रही हो परंतु उसका लक्ष्य विश्वमानवतावाद रहा है जो महामानव गांधी के जीवनदर्शन से निश्चित ही प्रभावित है। यह अधिकार से कहा जा सकता है कि पंत काव्य ने हिंदी काव्यधारा को अनोखी गरिमा प्रदान की है। इस पर चर्चा करना एक सुखद अनुभव है।

सामाजिक योगदान – (CONTRIBUTION TO THE SOCIETY)

आज के इस विषम दौर में जहाँ समाज के हर क्षेत्र में नीतिमूल्यों का ऱ्हास होता दिखाई दे रहा है। जहाँ पर नैतिकता को तरक्की की राह का अवरोध माना जा रहा है। नीतिमूल्यों को किनारे रख वैयक्तिक लाभ को महत्व दिया जा रहा है। सर्वत्र अनैतिकता, भ्रष्टाचार, झूठ, स्वार्थांधता का फैलाव हो रहा है ऐसी स्थिति में गांधीवाद को पुनश्चः स्वीकारने की जरूरत दिखाई दे रही है। इस दौर में गांधीवाद के जरिए ही हम स्वयं की स्वतंत्र पहचान बना सकते हैं। इस दृष्टि से गांधीवाद से प्रभावित पंत के काव्य का मूल्य विशेष बन जाता है। पंत के काव्य में वर्णित गांधीदर्शन आज के मनुष्य के संभ्रमित जीवन का दिशादर्शक बनने की सामर्थ्य रखता है। अतः जरूरत है मनुष्य उस पर चिंतन, मनन करे। जीवन में उसका अनुसरण करें।